पाकिस्तान में प्राकृतिक संसाधनों का दोहनः बलूचिस्तान के विशेष संदर्भ में

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

पूजा
राजनीति विज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email:poojascholar26@gmail.com

सारांश

1947 में भारत पाकिस्तान की आजादी के बाद से बलूचिस्तान का इतिहास शोषण और उत्पीड़न से भरा हुआ है। बलूचिस्तान को उसके ही संसाधनों से किस तरह वंचित रखा गया यह उसके लिए चिंता का विषय बना हुआ है। बलूचिस्तान पाकिस्तान की रीढ़ होते हुए भी आर्थिक रूप से दरिद्र क्षेत्र है। रणनीतिक रूप से बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से पाकिस्तान का लगभग 43 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करता है। 1998 की जनगणना के अनुसार यहाँ संपूर्ण जनसंख्या का लगभग 5 प्रतिशत भाग निवास करता है। बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था मुख्यतः प्राकृतिक गैस, कोयला एवं खनिजों पर आधारित है। बलूचिस्तान में स्थित सुई गैस क्षेत्र से ही पाकिस्तान में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति होती है, पंजाब और सिंध क्षेत्र में स्थापित उद्योग इसी पर आधारित है परन्तु स्वयं बलूचिस्तान इससे वंचित है। खनिज स्रोत्रों से भरे भंडार होते हुए भी यहाँ सर्वाधिक पिछड़ापन है। बलूचो को सबसे अधिक यह बात परेशान कर रही है कि उनके संसाधनों का दोहन पाकिस्तान और चीन कर रहा है उनके हिस्से में कुछ भी नहीं आ रहा है। उनके लोगों को ना ही रोजगार, शिक्षा, बिजली–पानी, ना ही संसाधनों का कोई हिस्सा उन्हें मिल पा रहा है जिसके चलते उन्हें अपना जीवन गुरबत में जीना पड़ रहा है। यहाँ पर सोना, तांबा के साथ ही कई तरह के मिनरल्स के खादान है। इनसे पाकिस्तान को काफी फायदा होता है। बलूचिस्तान के लोगों का कहना है कि पाकिस्तान सरकार इस क्षेत्र से इतना फायदा लेने के बावजूद यहाँ के लोगों के लिए कुछ नहीं कर रही है। बलूच लोग 1948 से ही पाकिस्तान सरकार के विरोध में हैं, और अपनी आजादी के लिए जंग लड़ रहे हैं। इनकी मांग है कि बलूचिस्तान को पाकिस्तान से अलग किया जाए।

मुख्य शब्दः *पाकिस्तान, प्राकृतिक संसाधन, बलूचिस्तान, शोषण, पिछड़ापन।*

प्रस्तावना

क्षेत्रफल के हिसाब से बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, हालांकि चारों प्रांतो के मुकाबले वहां की आबादी सबसे कम है, इनकी सीमाएं ईरान और अफगानिस्तान से मिलती है

और ये प्राकृतिक संसाधनों से माला–माल है, वहां गैस, तांबा और कोयले के अपार भंडार है, लेकिन तब भी बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे गरीब प्रांत है, बलूच एक जनजाति समुदाय है जो 17 समूहों में संगठित है। बलूच लोग पाकिस्तान में बलूचिस्तान के क्षेत्र में ज्यादा केन्द्रित है। इनकी जनसंख्या पाकिस्तान में लगभग 40 लाख तक है। इसकी जनसंख्या का लगभग एक–तिहाई भाग सिंध, पंजाब तथा पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में निवास करता है। 1951 की जनगणना के अनुसार यहाँ 34 प्रतिशत बलूची, 23 प्रतिशत पश्तो, 16 प्रतिशत सिंधी, 7 प्रतिशत पंजाबी, 1 प्रतिशत उर्दू भाषी तथा 18 प्रतिशत अन्य भाषाओं के लोग रहते है।[1] बलूचिस्तान अपने आप में एक ऐसा मुददा है, जिसका जिक्र करने पर पाकिस्तान हमेशा बचता रहता है। वर्तमान में जो बलूचिस्तान है उसके हिस्से पर भारत का अधिकार था और दूसरे हिस्से पर कलात के खान का अधिकार था। बलूचिस्तान के नागरिकों के मुताबिक पाक बलूचिस्तान के हर हिस्से को मौलिक अधिकारों से वंचित रखता है। गरीबी और शैक्षिक पिछड़ापन यहाँ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता। पाकिस्तान और बलूचिस्तान के संबंध इतने बिगड़े हुए है कि पाकिस्तानी सरकार बलूच लोगों को हेय और घृणा की दृष्टि से देखती है। हालांकि पाकिस्तान को एक मुस्लिम राष्ट्र होने की संज्ञा दी जाती है, परन्तु उसमें रहने वाले सभी मुस्लिम निवासी अलग–अलग मुस्लिम बहुल क्षेत्रों के है जो सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से भिन्न–भिन्न रीति रिवाजों को मानने के कारणवश एक दूसरे से अलग–थलग है। उनका धर्म एक है परन्तु भाषाओं, रीति–रिवाजों, कला, पहनावा इत्यादि से अलग–अलग दृष्टिकोण के लोग हैं। यही वह कारण है, जिसके आधार पर एक ही धर्म के नाम पर बने देश पाकिस्तान में लगातार अलग–अलग प्रांतो बलूच, सिंध, पख्तुन देश की मांग उठती रही है।[2]

बलूचिस्तान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बलूचिस्तान प्रांत का अर्थ है, 'बलूच लोगों की भूमि' यह एक देश नहीं है, बल्कि पाकिस्तान के चार प्रांतो में से एक है। यह पाकिस्तान का पश्चिमी प्रांत है और भौगोलिक रूप से ईरान तथा अफगानिस्तान के सटे हुए क्षेत्रों में बटा हुआ है, लेकिन इसका अधिकांश भाग पाकिस्तान के कब्जे में है, जो पाकिस्तान के कुल क्षेत्रफल का 43 प्रतिशत हिस्सा है।[3] इसकी राजधानी क्वेटा है। यह सबसे गरीब और उपेक्षित इलाका भी है। बलूचिस्तान के लोगों की प्रमुख भाषा बलूच या बलूची है। बलूची जनता का बहुत बड़ा भाग ईरानी संस्कृति से जुड़ा है और वे पाकिस्तान की जनजातियों में शुमार किए जाते है। 1944 में बलूचिस्तान के स्वतंत्रता का विचार जनरल मनी के विचार में आया था पर 1947 में ब्रिटिश इशारे पर इसे पाकिस्तान में शामिल कर लिया गया। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत का अधिकतर भाग 1947 से पहले कयाल रियासत में था जिसे बलूच लोग ग्रेटर बलूचिस्तान भी कहते हैं। कलात के अंतिम शासक अहमद यार खान ने 1930 के दशक में यह स्पष्ट किया था कि वह कलात की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। अंत में यह निर्णय हुआ कि बलूच एक आजाद मुल्क बनेगा। कलात के खान ने बलूच के जनमानस की नुमाइंदगी करते हुए बलूचिस्तान का पाकिस्तान में विलय करने से साफ इंकार कर दिया था यह पाकिस्तान के लिए असहनीय स्थिति थी। अंततः पाकिस्तान ने सैनिक कार्यवाही कर जबरन बलूचिस्तान का विलय कर

लिया। आर्थिक रूप से बलूचिस्तान पाकिस्तान का काफी दुर्लभ आबादी वाला प्रांत है। लेकिन इसकी आबादी में पिछले दशक के दौरान काफी तेजी से वृद्धि हुई है। पख्तूनों की तुलना में बलूच भी मूल रूप से एक जातीय समूह है। बलूचिस्तान में कई जनजातियां है तथा 17 आदिवासी समूह भी है और यह कई उपसमूह में विभाजित है तथा प्रत्येक जनजातियों को विभिन्न उपशाखाओं में विभाजित किया है। 17 प्रमुख बलूच जनजातियों में बुग्ती और मैरिस शामिल है। मैरिस जनजाति एक बलूच जनजाति है। ऐसा माना जाता है कि बलूचियों की उत्पत्ति मूल रूप से अरब या एशिया से हुई है। बलूचिस्तान की प्रमुख बोली बोले जाने वाली भाषाओं में बलूची की उत्पत्ति मूल रूप से अरब या एशिया से हुई है। बलूचिस्तान की प्रमुख बोली जाने वाली भाषाओं में बलूची तथा ब्राहुई है। ब्राहुई बोली जाने वाली जनजातियों में रायसानी, शाहावानी, सुमुलनी तथा बंगुलजई शामिल है तथा इनमें से अधिकांश जनजाति द्विभाषी है।[4]

बलूचिस्तानः अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति

1947 से पहले बलूचिस्तान एक संप्रभु राष्ट्र था जिसकी अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था थी, जिसको वह अपनी बौद्विक विरासत से जोड़ कर देखता था। परन्तु उसकी अपनी संस्कृति, सभ्यता, दर्शन एवं परंपराएं पाकिस्तान से मेल नहीं खाती है। बलूचों के प्रचलित रीति–रिवाजों की एक विशेष पहचान है, जो उसकी संस्कृति, धर्म, परंपराओं एवं मान्यताओं की प्रमुख सूचक रही है। बलूचिस्तान की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध और उतनी ही अधिक मूल्यवान भी है। बलूच लोग सदियों से अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाने में सफल भी रहे है। जिसका आधार उस क्षेत्र के खानाबदोश स्वदेशी संस्कृतियों में ही निहित है। धर्म की तरफ बलूची राष्ट्र का अनोखा उपागम उसकी अपनी राष्ट्र–केन्द्रित संस्कृति और परंपरा का ही परिणाम है, जो धर्म को एक विश्वास के रूप में देखता है। इतिहास के पन्नों में बलेची प्राचीन भारतीय–ईरानी धर्म 'पारसी' को मानते थे, किंतु पिछले कुछ वर्षों में बलूचियों ने सुन्नी इस्लाम को अपनाना शुरू कर दिया है। ज्यादातर बलूची अपने पड़ोसी मध्य एशियाई देशों के लोगों की तरह मांस, खवल और सब्जियों पर आश्रित रहते हैं। वस्तुतः बलूची अपने परिच्छेदिक और पारंपरिक पोशाकों के लिये जाने जाते हैं। शहर में पुरूष प्रायः लम्बी कमीज, लम्बी बहोली और ढ़ीली पेंट पहनते हैं। प्रायः औरतों की चोली और बहोली शीशे के महीन टुकड़ों, सुईं की कढ़ाई और जटिल बुनाई के द्वारा तैयार की जाती है। महिलायें प्रायः सिर को दुपटटे से ढककर रखती हैं जिसे स्थानीय भाषा में 'सरीग' कहा जाता है। प्राचीन काल में विशेषताः पूर्वी इस्लामी युग के दौरान बलूच स्त्रियों द्वारा अलग–अलग महोत्सवों पर लोकनृत्य और लोकगान को प्रदर्शित करना आम बात थी। कई वर्षों तक चले युद्ध तथा हमलों के कारण बलूची संगीत पर रोक लग गई है और आगे चलकर वह 21वीं सदी में प्रचलित नहीं हो पायी।

बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था मुख्यतः प्राकृतिक गैस, कोयला एवं खनिजों पर आधारित है। 1972 से बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था में तो 2.8 गुनी बढ़ोतरी हुई है, परन्तु बलूची अवाम आज भी गरीबी, भूखमरी एवं अशिक्षा की मार झेलने पर मजबूर है। बलूचिस्तान के 'चागाई' जिले के 'रिको

दिक' नामक स्थान पर विश्व की सबसे बड़ी तांबे की खदानों में से एक पाया गया है, जिसकी कीमत लगभग 3.3 बिलियन अमेरिकी डालर है। बलूचिस्तान के पूर्वी इलाकों में सीमित मात्रा में खेती होती है, जबकि अरब सागर के तटीय इलाकों में मछली पकड़ना यहां के लोगों की अन्य आर्थिक गतिविधि है। मछली पकड़ना एवं उसका व्यापार करना यहां के स्थानीय लोगों की जीविका का एक प्रमुख साधन है परन्तु जैसे–जैसे इस इलाके का रणनीतिक महत्व बढ़ता गया, वैसे–वैसे यहां का मतस्य संग्रहण क्षेत्र घटता गया और हालात यह है कि यहां के मछुआरे शहरों में मजदूर बनकर रह गए हैं।[5]

बंगाली लोगों की तरह बलूचों को भी एक कच्चा माल आपूर्तिकर्ता के रूप में देखा जाता रहा है। बलूच मुक्ति संघर्ष का वर्तमान दौर यहां के सामाजिक–आर्थिक कारणों से ही प्रेरित है। बलूचिस्तान में स्थित सुई गैस क्षेत्र से ही पाकिस्तान में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति होती है, पंजाब और सिंध क्षेत्र में स्थापित उद्योग इसी पर आधारित है। परन्तु स्वयं बलूचिस्तान इससे वंचित है। बलूची अवाम को बेहतन नौकरी, रॉयल्टी, आधारभूत संरचना और औद्योगिक विकास का आश्वासन दिया गया, परन्तु गैस, तांबा, चांदी, सोना और कोयला जैसे खनिजों की रॉयल्टी का कोई स्वीकृत रास्ता नहीं निकल सका।[6]

पंजाबियों का अधिपत्य और वर्चस्व

पंजाब जनसंख्या की दृष्टि से पाकिस्तान का सबसे बड़ा राज्य है। पंजाब की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि था जिस पर प्रान्त की 60 प्रतिशत जनसंख्या निर्भर थी। पंजाब प्रान्त में सरकार का गठन दोनों ही राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न था क्योंकि पंजाब न केवल पाकिस्तान का सर्वाधिक जनसंख्या वाला और उद्योग संपन्न प्रान्त है वरन् इसे पाकिस्तान का ह्रदय भी कहा जा सकता है। बलूचिस्तान की लिबरेशन आर्मी सिन्धी, पंजाबी तथा पश्तुनों को इलाके से बाहर करना चाहती है। इसके समर्थक गैर बलूच लोगों को अपना नहीं मानते हैं। जहाँ तक बलूचिस्तान की बात है तो वहां पर पाकिस्तान के खिलाफ विरोध–प्रदर्शन करना कोई नयी बात नहीं है। पाकिस्तान की सेना और सरकार दोनों ही इन प्रदर्शनों के खिलाफ उठने वाली आवाजों और अधिकारों को बेरहमी से दबाती रही है। पाकिस्तान की स्थापना के समय से ही अधिकतर पंजाबी लोग उच्च पदों पर आसीन है। जहाँ पंजाब प्रान्त का देश की सेना और नौकरशाही में वर्चस्व था और उन्हें इस बात की आशंका थी कि यदि पूर्वी पाकिस्तान को उसकी आबादी के हिसाब से विधायिका में सीटें आवटिंत की गयी तो यह उनके हितों के साथ–साथ पूरे पश्चिमी पाकिस्तान के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। पाकिस्तान में किसी सैन्य और सिविल नौकरशाह को सार्वजनिक रूप से पंजाबी बोलते नहीं सुना होगा। एक रिर्पोट के मुताबिक, पंजाब में 56 फीसदी मुस्लिम पंजाबी, 26 फीसदी हिन्दू पंजाबी, 14 फीसदी सिख पंजाबी और 4 फीसदी ईसाई पंजाबी शामिल हैं। उपनिवेशिक शासन के दौरान से ही पंजाबियों का अधिपत्य तथा वर्चस्व पाकिस्तान की राजनीति में लाभान्वित समूहों की भांति रहा है, जिसका प्रमुख कारण ब्रिटिश प्रशासन में बड़े जमींदारों के रूप में रहा है, जिससे वह शासन पर नियंत्रण बनाए रखते थे। इसके साथ ही उन्हें

अंग्रेजों का भी भरपूर सहयोग मिलता रहा है। इन संयुक्त प्रान्तों के मुस्लिमों को डर था कि स्वतंत्र भारत के लोकतंत्र में हिन्दू बहुल लोग ही राज करेगें। दूसरी ओर पंजाबियों ने 1857 के विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता की थी। पंजाबियों का कहना है कि पंजाब पाकिस्तान में नेतृत्वकारी प्रान्त है, लेकिन पंजाबी नेतृत्वकारी भाषा के रूप में शामिल नहीं है। प्रथम विश्व युद्ध के समय भी पंजाबियों ने अंग्रेजो को भारत पर नियन्त्रण के लिए सेना में अपने जवान उपलब्ध कराएं, जिसके बाद अंग्रेजो ने इन्हें काफी लाभ दिए।[7]

शुरूआत में मुस्लिम लीग तथा पाकिस्तान की मांग के लिये पंजाबियों का समर्थन काफी कम था, परन्तु बाद में अपने हितों की पूर्ति के लिए पाकिस्तान के निर्माण के बाद मुस्लिम लीग को पंजाबियों ने सत्ता प्राप्ति के लिये एक यंत्र की भांति चुना। इस संदर्भ में अदील खान का कहना है कि 'पाकिस्तान के क्षेत्रों में रहने वाले ज्यादातर लोगों ने पाकिस्तान की मांग नहीं की थी, बल्कि मुस्लिम अल्पसंख्यक और हिन्दु बहुसंख्यक दोनों में से एक का चुनाव कर उसको पाकिस्तान में अपनाया गया था। उनका मानना था कि पाकिस्तान में मुस्लिम अल्पसंख्यक नहीं रहेंगे। वास्तव में यह आन्दोलन भारत के उत्तरी प्रांत में रहने वाले उन मुस्लिमों का था जो पहले से ही राज्य संस्थाओं का हिस्सा थे। हिन्दु बहुसंख्यकों से अपनी नौकरी छीन जाने के डर से इन्हें पृथक राष्ट्र की मांग के लिए प्रोत्साहित किया, जहां नौकरियों और राज्य व्यवस्था पर केवल इन्हीं का कब्जा था, किंतु सभी नृजातीय रूप से मुस्लिम समूहों का यह सपना साकार न हो सका।[8]

पाकिस्तान निर्माण के बाद पाकिस्तान की राज्य व्यवस्था विशेष रूप से पश्चिमी पाकिस्तान तथा विशेष नृजातीय समूहों (पंजाबी तथा मुहाजिरों) पर आधारित थी। जब पूर्वी पाकिस्तान में क्षेत्रीय असंतुष्टि बढ़ने लगी, तब केन्द्र सरकार ने अन्य नृजातीय समूहों की शिकायते सुनने के बजाय केंन्द्रीकृत तथा समरूपी परियोजनाओं के जरिये सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का सहारा लिया। उर्दू भाषा, जो देश की केवल 8 प्रतिशत लोगों की भाषा थी, को प्रमुख राष्ट्रभाषा बना दिया गया।[9] सिंध प्रान्त में भी उर्दू ने सिंधी भाषा का स्थान ले लिया, क्योंकि उर्दू भाषा मुहाजिरों, जो नौकरशाही में अधिक संख्या में थे, उनकी भाषा थी। उर्दू को निर्देश की भाषा तथा राष्ट्रभाषा बनाने जैसे कारणों ने अनेक नृजातीयताओं को आवाज उठाने के विरोध में अपनी आवाज बुलंद की। फिरोज अहमद के अनुसार 'शिक्षा तक आसान पहुंच', सरकार में प्रभावी स्थिति, नौकरशाही पर नियन्त्रण तथा सेना में अधिपत्य होना जैसे प्रमुख कारणों से पंजाबी समूह देश का सबसे शक्तिशाली समूह बन गया।[10]

चार्ल्स कैनेडी ने अपनी पुस्तक 'Bureaucracy in Pakinstan" में बताते हैं कि पाकिस्तान के निर्माण के समय से ही पंजाबियों की स्थिति यूं तो काफी अच्छी रहीं किन्तु जिया उल हक के शासन काल (1977–88) ने उसे और शक्तिशाली बना दिया है। इस समय सेना में 85 प्रतिशत पंजाबी, 12 प्रतिशत पख्तून (जिनकी भूमिका पाकिस्तान के शासन में छोटे भागीदार के रूप में थी)। पाकिस्तान तथा सिंध प्रान्त की मुख्य सिविल सेवाओं तथा छोटे पदों पर जो भर्तियां की गयी थी उनमें अक्सर 10 प्रतिशत पंजाबियों को शामिल किया गया था।[11] नौकरशाही तथा सेना में पंजाबियों के राजनीतिकरण का कालसन् 1958–69, 1961–71, 1977–88, 1999–2007, 2008–2013 और

उसके बाद भी पाकिस्तान की राजनीति, सैन्य व्यवस्था तथा नौकरशाही आदि सभी स्तरों पर पंजाबियों का अधिपत्य तथा वर्चस्व देखने को मिलता है।[12] शुरूआत में पंजाबियों ने पाकिस्तानी सेना के साथ जुड़ी दूसरी ताकत 'पख्तून' लोगों के साथ संधि की तथा मुहाजिर के साथ आपसी सहयोग हेतु जुड़ाव किया, किंतु अयूब के शासनकान से मुहाजिरों का देश की शक्ति संरचना में भागीदारी कम देखी गई, जिसके कारण पंजाबियों और सिंधियों के साथ इनका संघर्ष बढ़ा। पाकिस्तान की इस दुर्दशा का चित्रण हमजा आलवी ने अपनी पुस्तक "Ethnicity: Muslim Society and the Pakistan Ideology" में किया जिसमें उन्होंने इसे राज्य और नागरिक समाज (State and Civil Society) के बीच का संघर्ष माना है।[13]

पिछले कुछ समय से पंजाब के सांस्कृतिक तथा भाषाई रूप से भिन्न लोगों में भी नृजातीय विभिन्नताओं से उत्पन्न भावनाओं के बीज पनप रहे हैं। जिसमें पंजाब के तीन प्रान्तों में पंजाबी भाषा की अलग–अलग बोलियों तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं से उत्पन्न भावनाओं ने नृजातीय आन्दोलन के बीज बो दिए है। प्रान्त के उत्तर पश्चिमी हिस्से में हिंद को भाषा बोली जाती है जिससे डेरा गाजी खान, डेरा स्माइल खान और रावलपिंडी शामिल है। वहीं दूसरी ओर पंजाब के निचले हिस्से, मुल्तान, बहावलपुर और सियाल कोट में सैराइकी भाषा का प्रचलन है। हिंद को भाषी जो देश की जनसंख्या का 2.4 प्रतिशत हिस्सा है, अपने लिए अलग प्रान्त की मांग शुरू कर चुके हैं, वही डेरा गाजी खान जिले के लोग पंजाब से पृथक होकर उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त में मिलना चाहते हैं। 1981 के सेंन्सस सर्वे में सैराइकी को पहली बार पंजाबी भाषा से अलग भाषा के रूप में शामिल किया गया और यह पाया गया कि पाकिस्तान की लगभग 9.8 प्रतिशत और पंजाब प्रान्त की 14.9 प्रतिशत लोग सैराइकी भाषा बोलते हैं। यही प्रमाण है जो सैराइकी भाषीय लोगों को पंजाबी, पश्तो और सिंधी भाषीय के बाद खुद को देश का चौथा बड़ा समुदाय के रूप में प्रदर्शित किया गया है।[14] भले ही बलूचिस्तान पाकिस्तान के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले खनिजों वाला एक खनिज समृद्ध राज्य है। लेकिन प्राकृतिक संसाधनों से भरे इस इलाके में लोगों की आर्थिक दशा बहुत ही खराब है। आज भी यहां लोग बुनियादी सेवाओं से दूर हैं।[15] ग्वादर पोर्ट डेवलपमेंट के नाम पर इस भरपूर संपदा पर चीन ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है। 1952 में इस प्रांत के डेर बुग्ती में गैस भंडार का पता चला और दो वर्ष बाद उत्पादन शुरू हो गया। हालांकि उसका फायदा समूचे सिंध और पंजाब को हुआ, लेकिन बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा को इस गैस पाइपलाइन से 1985 में जोड़ा गया। बलूचिस्तान में प्राकृतिक गैस के भंडार के अलावा यूरेनियम, पैट्रोल, तांबा और डेर सारी दूसरी धातुएं भी है। यहां के सुई नामक जगह पर मिलने वाली गैस से पूरे पाकिस्तान की आधी से ज्यादा जरूरत पूरी होती है लेकिन इसके बदले न तो स्थानीय बलूच लोगों को रोजगार मिला और न ही रॉयल्टी। हालांकि दिखाने के लिए दी गई रॉयल्टी भी यह कहकर वापस ले ली जाती है कि गैस निकालन की लागत अधिक है। जिससे बलूचिस्तान पर कर्ज बढ़ता जा रहा है। बलूचिस्ताना पर पाकिस्तान अपनी हुकूमत इस कदर चला रहा है के बलूच लोगों को राजनीति या

आर्थिक अधिकार देने को तैयार नहीं है। जिससे बलूचिस्तान में पाकिस्तान के खिलाफ विरोध की आवाज लगातार उठती रही है जिसको दबाना अब पाक के बस की बात नहीं है।[16]

बलूचिस्तान में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं विकास

बलूचिस्तान में अशांति के पीछे पहला और सबसे प्रमुख कारण है पाकिस्तान सरकार द्वारा बलूचिस्तान का दोहन शामिल है। बदले में राजस्व का उचित हिस्सा बलूचिस्तान को न देना। बलूचिस्तान में पाकिस्तान के कुल खनिज संसाधनों का 20 प्रतिशत हिस्सा है। पाकिस्तान के कुल गैस उत्पादन में 36 प्रतिशत हिस्सेदारी बलूचिस्तान की है।[17] बलूचिस्तान के आर्थिक रूप से पिछड़ेपन और आर्थिक असंतोष की बात की जाए तो इसका एक झलक साल 1952 में इस क्षेत्र के डेरा बुग्ती में गैस भंडार का पता लगाया गया। 1954 से यहां से गैस का उत्पादन शुरू किया गया, उसका पूरा लाभ पूरे पाकिस्तान को मिलने लगा लेकिन बलूचिस्तान की राजधानी क्वेटा को 1985 में इस गैस पाइपलाइन से जोड़ा गया। इसी क्षेत्र के चगाई मरूस्थल में साल 2002 से सड़क परियोजना शुरू की गई जो कि चीन के साथ तांबा, सोना और चांदी उत्पादन करने की पाकिस्तानी योजना है। इससे प्राप्त लाभ में चीन का 75 प्रतिशत हिस्सा है जबकि पाकिस्ताना का 25 प्रतिशत है और इस 25 प्रतिशत में से बलूचिस्तान को कुल 2 प्रतिशत ही मिल पाता है।[19]

बलूचिस्तान पाकिस्तान का समृद्ध राज्य है। प्रान्त के अपार प्राकृतिक स्रोत्र तथा संसाधन भी प्रान्त के पिछड़ेपन को दूर नहीं कर पाए। यहां गौर, खनिज, कोयला इत्यादि के अपार भंडार है। बलूच लोगों की हमेशा विभिन्न सरकारों से यह शिकायत रहा है कि इन्हें अपने प्राकृतिक संसाधनों के लाभ का जायज हिस्सा नहीं मिल रहा। आज यहां देश की 36 प्रतिशत गैस का उत्पादन होता है जबकि इस प्रान्त में इस गैस की आधी खपत भी नहीं होती। पंजाब जैसे समृद्ध प्रान्त ही इसका लाभ उठा रहे हैं। 28 में से यहां के केवल चार जिलों को ही पाइप गैस उपलब्ध है। यहां मात्र 5–6 प्रतिशत जनसंख्या के पास गैस कनैक्शन है और प्रान्त में एक भी कंप्रेस्ड नैचुरल गैस स्टेशन नहीं है। गैस रोयालिटि के मामले में भी देश के शासकों ने बलूचों के साथ न्याय नहीं किया। प्रान्त को यहां से निष्कासित गैस की रॉयल्टी का मात्र 12 प्रतिशत हिस्सा ही उपलब्ध होता है, जबकि इस प्रान्त के गैस भंडार से 1.4 बिलियन डालर की वार्षिक आय होती है और बलूचिस्तान को मात्र 116 मिलियन डालय की उपलब्ध हो रहा है।[19] देश के शासकों ने ना केवल यहां के संसाधना को दोहन अपने लाभ के लिए किया, बल्कि यहां की जमीने भी सैनिक तथा सरकारी अफसरों को कम दाम पर बेच दी। आज बलूच लोग अपने ही प्रान्त में संसाधनों का लाभ तथा रोजगार पाने के लिए जूझ रहे हैं।[20]

ग्वादर बंदरगाह का निर्माण

दरअसल ग्वादर में अत्याधुनिक बंदारगाह निर्माण भी इस टकराव का हिस्सा था, जिसे चीन अपने दक्षिण प्रान्त से पाकिस्तान में आर्थिक कॉरिडोर का एक अहम पड़ाव बनना चाहता था, इसका निर्माण 2002 में शुरू हुआ और इस पर पूरा नियन्त्रण पाकिस्तान की संघीय सरकार का है। इसके निर्माण में चीन इंजीनियर या मजदूर ही लगाए गए थे। बलूच लोगों को तकरीबन इससे बाहर ही

रखा गया है। आसपास की जमीने भी कथित तौर पर सरकारी अधिकारियों ने बलूच लोगों से लेकर भारी मुनाफे में बेच दी है। इससे उपजी नाराजगी को दबाने के लिए पाकिस्तान ने फौजी करवाई का रास्ता अपनाया। इसमें प्रान्त के संसाधनों पर स्थानीय नियन्त्रण और फौजी ठिकानों के निर्माण पर प्रतिबंध की मांग प्रमुख रूप से शामिल थी। इसी दौरान पाकिस्तानी फ्रंटियर के मेजर शुजात हुसैन के मुताबिक 15 दिसम्बर 2005 को एक संसदीय समिति ने 30 सुझाव प्रस्तुत किये जिनके महम बलूचिस्तान को 5 बिलियन गैस रॉयल्टी का बकाया देना, आरक्षण व्यवस्था को कड़ाई से लागू करना तथा ग्वादर बंदरगाह का 7 प्रतिशत राजस्व बलूचिस्तान को देना तथा प्रान्तीय स्वायत्ता हेतु एक सामान्य हित समिति बनाने की पेशकश भी इसमें प्रमुख से शामिल थी। इसके बाद इन सभी सुझावों पर सकरार के द्वारा कार्यान्वयन ना हो पाने के कारणवश उपद्रव की स्थिति बनी रही।

बलूचिस्तान में भाषा का मुद्दा

पाकिस्तान के विरूद्ध बलूचिस्तान के संघर्ष में भाषा सबसे प्रमुख मुद्दा रहा है। बलूचिस्तान वह इलाका है जिसकी जमीन पर मानव सभ्यता का विकास दुनिया में सबसे पहले देखने को मिलता है। अपनी भाषा के प्रति बलूच लोगों का भी उतना ही लगाव रहा है जितना अन्य नृजातीय लोगों का। बलूचो द्वारा बोली जाने वाली ब्राहुई भाषा भी दुनिया की जीवित भाषाओं में सबसे प्राचीन मानी जाती है। बलूचो में इस बात को लेकर आक्रोश है कि सत्ता ने उनकी बलूच और ब्राहुई जैसी समृद्ध मातृभाषाओं का विकास न करके उर्दू को जबरदस्ती लादा, जिसके कारण वहां संघर्ष देखने को मिला। बलूची बुद्धिजीवियों की विभिन्न सरकारों से यह शिकायत रही है कि सरकार ने इनके भाषाई आंदोलन को अनदेखा किया और दबाने का प्रयास किया है। उर्दू भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना तथा हर प्रान्त पर उसे थोप देने के कारण बलूच लोग हमेशा खफा रहे। बलूची लोग भाषा को अपनी पहचान के लिए खतरा माना है।[21] ब्राहुई भाषा के मुद्दे को लेकर क्वेटा में सन् 2015 में एक बहुत बढ़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था जिससे यह कहा गया था कि यदि सरकार ने ब्राहुई और दूसरी मातृभाषाओं का विकास न करके उर्दू को लाद दिया तो बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई की तरह का संघर्ष पाकिस्तान के अन्य इलाकों में भी छिड़ सकता है। इस संदर्भ में तारिक रहमान का कहना है कि जब विभिन्न नृजातीय समूह शक्ति और संसाधनों हेतु प्रतिस्पर्धा करते हैं तब भाषा इनकी पहचान का एक महत्वपूर्ण संकेत बन जाती है।[22]

मानव विकास सूचकांक रिर्पोट

मानव विकास सूचकांक के मामले में भी यह प्रान्त बेहद पीछे है। 2003 में जहां पंजाब का मानव विकास सूचकांक 0.557, सिंध का 0.540, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त का 0.510 था वही इनकी तुलना में बलूचिस्तान में यह केवल 0.499 रहा।[23] बलूच समस्या में अलगावाद के साथ सामाजिक–आर्थिक बहिष्करण महत्वपूर्ण रहा है। यहां पर बहुत कम सामाजिक–आर्थिक विकास हुआ है और रोजगार के अवसर बहुत कम है। पाकिस्तान में बलूचो की हमेशा उपेक्षा की गई है। बलूची लोगों का देश की संघीय सेवाओं में सबसे कम प्रतिनिधित्व रहा है, जो इनकी जनसंख्या के अनुपात से काफी कम है। एक अध्ययन के अनुसार पाकिस्तान में 1947–1977 के मण्य गठित

मत्रिमंडलों में कलु 179 केंद्रीय मंत्री बनाये गये जिनमें से केवल 4 बलेच थे। एक अध्ययन ने यह दर्शाया कि सेना में अधिकारी स्तर पर 70 प्रतिशत पंजाबी, 15 प्रतिशत पठान, 10 प्रतिशत मुहाजिर तथा 5 प्रतिशत में बलूच एवं सिंधी लोग थे।[24] नौकरशाही में भी बलूचों को कोई महत्व नहीं दिया गया है। एक अध्ययन यह दर्शाता है कि पाकिस्तान के ग्रेड–22 से 52 में संघीय सचिव है जिनमें से 31 पंजाब, 11 पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, 9 सिंघ तथा 1 आजाद कश्मीर से है, मगर बलूचो को यहां कोई प्रतिनिधित्व नहीं मिला। दरअसल, पिछले दस वर्षों में लगातार यह कोशिश की गई है के बलूचिस्तान और सिंध के लोगों को नौकरशाही में बिल्कुल जगह न दी जाए।[25] न्यायिक सेवा में भी इसी प्रकार की स्थिति है। उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट दिखाई देता है कि पाकिस्तान में बलूचो को सांस्थानिक बहिष्कार किया जा रहा है।

विकास के लिए धन का आवंटन भी गैर बलूची नौकरशाही के हाथों में है। विकास प्रशासन के क्षेत्र में स्थानीय लोगों की भागीदारी को नजरअंदाज किया गया है। पंजाबियों ने बलूचिस्तान में आंतरिक उपनिवेश जैसा स्थापित कर लिया है। विकास के नाम पर बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का बेरहमी से शोषण किया जाता रहा है। विकास का कोई लाभ बलूचियों को नहीं मिला इसलिए अब वे विकास का ही विरोध करने लगे है। इस क्षेत्र के साथ अन्याय इस बात से सिद्ध होती है कि सुई गैस पाइपलाइन से जहां पाकिस्तान के दूसरे क्षेत्र लाभान्वित हो रहे थे वहीं यहां की जनता को इसका कोई लाभ नहीं मिल रहा है। बलूच नेताओं की यह शिकायत है कि प्रदेश की प्राकृतिक दौलत की आमदनी का 4–5 प्रतिशत भाग भी बलूचो के विकास पर खर्च नहीं होता हैं। वहां सड़के, स्कूल, बैंक, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तथा यहां तक की एक बड़े भाग में पीने का पानी भी नसीब नहीं होता है। 2005 में पुनः शुरू हुए बलूच विद्रोह की मुख्य मांगे प्रान्तीय स्वायत्ता, राष्ट्रीय संसाधनों का समान वितरण एवं बलूचो को मुख्यधारा में शामिल करना आदि है।

संदर्भ ग्रंथ

1 Harihar Bhattacharya*, Federalism in Asia: India. Pakistan and Malaysia* (New York: Rutledge, 2010), P. **33** and also see Stephen Cohen, The Idea of Pakistan, (Lahore, Vanguard, 2005), Pp, **201-230**. And also see, Population Census 1951, Population Census Organization of Pakistan, and Government of Pakistan.

2 Urmila Phadnis, *Ethnicity Diversity in Pakistan: Going Beyond Federalism,* (University of Bradford, P**. 131**.

3 Census Report of Pakistan 1998*, Population Census Organization, Pakistan, Government of Pakistan*, available at, www.census.gov.pk, 19.02.2012

4 Ahmad Feroz, *'Ethnicity and Politics in Pakistan',* (Karachi: Oxford University Press, 1998), P**. 392**

5 ---------- 2016, Pp**. 12-16**.

6 Veena Kukrreja, *Contemporary Pakistan, Political Process, Conflict and Crisis,* (New Delhi: Sage Publication), 2003, Pp**. 132.**

7 Stephen Cohen, The Pakistan Army, (Karachi: Oxford University Press), 1984, P. 42

8 Adeel Khan, Ethnicity, Islam and National Identity in Pakistan', (South Asia: Journal of South Asian Studies), Vol. XXII, Issue, 1999, P. **172**
9 Tariq Rahman, Language and Politics in Pakistan, (New Delhi: Orient Longman Pvt. Ltd,), 2007, P. **1**
10 Feroz Ahmed, The Rise of Muhajirs in Pakistan, (Summer Fall: Pakistan Progressive), Vol. X, No. 2-3, 1989, P**. 35**
11 12 Abha Dixit, Pakistan: After a Year of Benazir Rule, Strategic Studies, Vol, VIII (2), 1990, P**. 205**
12 13 Muhammed Mushtaq, Managing Ethnic Diversity and Federalism in Pakistan, European Journal of Scientific Research, Vol. 33, No. 2, Pp**. 279-294**
13 Hamza Alavi, Ethnicity: Muslim Society and the Pakistan Ideology, in Anita M. Weiss (ed.) Islamic Reassertion in Pakistan: The Application of Islamic Laws in a Modern State, (Syracuse: Syracuse University Press), 1986, p. **42**
14 Government of Pakistan, Main Finding of the 1981 Population Census, Statistical Division, Population Census Organization (Islamabad: Government of Pakistan), 1983
15 Nadeem Qasir, Pakistan Studies: An Investigation into the Political Economy 1948-1988 (Karachi, Oxford University Press, 1991), P**. 26**.
16 Veena Kukreja, Contemporary Pakistan Political Process, Conflict and Crisis, (New Delhi: Sage Publication), 2003, P**. 132.**
17 Frederic Grare, 'Pakista: The Resurgence of Baluch Nationalism, Cornegie Paper no. 65. January, 2006, P. **05**.
18 Baluchis of Pakistan: On the Margins of History, The Foreign Policy Centre Report, London, The Foreign Policy Centre, November 2006, P. **49**
19 John C.K. Daly, The Baluch Insurgency and its Threat to Pakistan's Energy Sector, Global Terrorism Analysis, The James Town Foundation Focus, 21 March 2006, 3(11), available at, http://www,jamestown.org/terrorism/news/article.php?articleid= 2369935, 20-11-2013.
20 Rajshree Jetly, Resurgence of the Baluch Movement in Pakistan: Evening Perspectives and Challenges, in Rajshree Jetly (eds.) Pakistan in Regional and Global Politics, (New Delhi: Rutledge, 2009), P. **218**.
21 Yunus Samad, A Nation in Turmoil, Nationality and Ethnicity in Pakistan, (New Delhi: Sage Publication, 1995), P. **195**
22 Tariq Rahman, Language, Power and Ideology', in Veena Kukreja, M.P. Singh (eds.), Pakistan: Democracy, Development and Security Issues, (New Delhi: Sage Publication), 2005, P**. 109**
23 Pakistan National Human Development Report 2003, UNDP, Pakistan. Estimation by Wasay Majid and Akmal Hussain, at http://www.org.pk/nhdr/htm_pages/cp_1.htm, accessed on 10.01.13
24 Kukrreja Veena, (2003), Contemporary Pakistan: PoliticalProcess, Conflict and Crisis (New Delhi: Sage Publication) Pp. **132-33**
25 सतीश पेडणकर, बलूचिस्तान की बगावत, जनसत्ता, 14 फरवरी, 2006 p. **6**
26 असीम सज्जाद अख्तर, बलूचिस्तान वर्सेस पाकिस्तान, इकोनिमिक एंड पालिटिकल वीकली, भाग 42, अंक **45-46**, नवम्बर 2007, p **73-79**.